National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(50): 208-211
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

टाशी नामगेल
अतिथिसंकाय (सहायकाचार्यश्रेणी)
बौद्धदर्शन एवं पालिविद्याशाखा,
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय,
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा

Correspondence:
टाशी नामगेल
अतिथिसंकाय (सहायकाचार्यश्रेणी)
बौद्धदर्शन एवं पालिविद्याशाखा,
केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय,
एकलव्यपरिसरः, अगरतला, त्रिपुरा

बौद्ध निकायों का विकास

टाशी नामगेल

ईसा पूर्व छठी शताब्दी का समयकेवल भारत के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए आश्चर्यजनक युग था। इस युग में विश्व के अनेक भागों में आध्यात्मिक,बौद्धिक प्रतिभा, धर्मसुधार, राजनीति, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के व्यापक दौर का प्रादुर्भाव हुआ। इस युग में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ।[1] चीन में लाओ-सी (Laozi)[2] और कन्फ्यूशियस (Confucius)[3] हुए, यूनान में परमेनीडेस (Parmenides)[4], ईरान में जरथुस्त्र (Zarathustra)[5] और भातरवर्ष[6] में महावीर (Mahavir)[7] और बुद्ध हुए। इसी समय में कई विख्यात आचार्य हुए, जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक धरोहर पर चिंतन किया तथा नए दृष्टिकोण विकसित किए।[8] गौतम बुद्ध, जिन्हें सिद्धार्थ गौतम के नाम से भी जाना जाता है, बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उनका जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल) में शाक्य गणराज्य के राजकुमार के रूप में हुआ। उनके पिता राजा शुद्धोधन तथा माता महामाया थीं। सिद्धार्थ का बाल्यकाल एवं यौवन वैभवपूर्ण था, किन्तु 29 वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग किया। लगभग छह वर्ष तक कठोर तपस्या एवं ध्यान के पश्चात्, 35 वर्ष की आयु में उरुविल्ला (बोधगया) के पूर्व की ओर जहाँ पर रमणीय अरण्य, झाड़ी-झुरमुट, लताएँ तथा नैरञ्जना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें निर्वाण (ज्ञानोदय) प्राप्त हुआ।[9] भगवान बुद्ध पैंतालीस वर्ष तक इस लोक में विचरण कर लोकहित के लिये धर्मोपदेश आदि समग्र कृत्य सम्पन्न करने के पश्चात अन्त में कुसीनारा के दो उत्तम युगल सालवृक्षों के बीच वैशाख पूर्णिमा के दिन जगत्प्रकाशक वह अनुपम दीप अर्थात् भगवान बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए।[10] बोधगया के उत्किर्ण लेख में महापरिनिर्वाण की तिथि 544 ईसापूर्वा दी गई है। महापरिनिर्वाण के समय भगवान के समीप आयुष्मान **आनंद** और **अनिरुद्ध** थे।[11]

प्रथम बौद्ध संगीति भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण (लगभग 483 ईसा पूर्व) के पश्चात् राजगृह (वर्तमान राजगीर, बिहार) में आयोजित की गई। यह संगीति बुद्ध की शिक्षाओं को संरक्षित करने के उद्देश्य से बुलाई गई थी। इसका आयोजन मगध सम्राट अजातशत्रु के संरक्षण में हुआ। इस संगीति में पञ्चशत (500) भिक्षुओं ने भाग लिया, जिनका नेतृत्व महाकाश्यप ने किया।

इस संगीति में बुद्ध के उपदेशों को दो प्रमुख भागों में संकलित किया गया: विनय पिटक (संघ के नियम) तथा सुत्त पिटक (बुद्ध के उपदेश)। बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनन्द ने सुत्त पिटक का पाठ किया, जबकि उपालि ने विनय पिटक प्रस्तुत किया। ये शिक्षाएँ मौखिक रूप में संरक्षित की गईं, क्योंकि उस काल में लिखित संकलन प्रचलित नहीं था। इस संगीति ने बौद्ध धर्म की आधारशिला को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[12]

तथागत गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के सौ वर्ष बीतने के बाद द्वितीय संगीति की बैठक धर्म और विनय पर निर्णय हेतु वैशाली में हुई। जिसकी संरक्षकता मगधरनेश कालाशोक ने की थी और वैशाली

के बालिकाराम महाविहार में महास्थविर रेवत की अध्यक्षता में 700 भिक्षुओं द्वारा सम्पन्न हुई थी। इसलिए इस संगीति को **सप्तशतिका** भी कहा जाता है। इस संगीति में आयुष्मान रेवत ने संघ के बीच आयुष्मान सर्वकामी से उक्त दस बातों को पूछा था और सर्वाकमी ने उत्तर दिया। संघ ने निर्णय किया कि वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने जिन दस बातों का प्रचार एवं आचरण करना प्रारम्भ किया है वे धर्म-विरुद्ध, विनय-विरुद्ध तथा भगवान बुद्ध के शासन से बाहर की थी। अन्त में घोषणा की गयी कि विवाद शान्त, उपशान्त हो गया था।[13] दीपवंस के अनुसार द्वितीय संगीति वैशाली की कूटागारशाला में आठ मास में सम्पन्न हुई थी।–

कूटागारसालायेव वेसालियं पुरूत्तमे।
अट्ठमासेहि निट्ठासि दुतियो सङ्गहो अयं॥[14]

महावंस के अनुसार वज्जी (वृजिप्रदेश) के भिक्षु दस बाते (दस वत्थूनि) का समर्थन करते थे। जिन्हें स्थविर काकण्डकपुत्र यश धर्मसम्मत नहीं मानते थे। इन वज्जी भिक्षुओं ने यश द्वारा विरोध किये जाने पर, उनका प्रतिसारणीय कर्म किया। यश को अपना पक्ष अद्भुत वक्तृत्वकौशला के साथ रखा। इसके विरोधस्वरूप वज्जिपुत्र भिक्षुओं ने उनको उत्क्षेपणीय दण्डकर्म दिया जिसका अर्थ था स्थविर यश का सङ्घ से निष्कासन हुआ।[15] महावंस के अनुसार उस समय वैशालीवासी अनेक वज्जिपुत्रक भिक्षुओं ने उपर्युक्त दस बातों का समर्थन इस प्रकार है।–

१. **सिङ्गिलोणकप्प**- भिक्षा के समय सींग की खोल में नमक ले जाना। २. **द्वङ्गुलकप्प**- मध्याह्न में निश्चित समय के बाद सूर्य के दो अङ्गुल अधिक उतर जाने पर भी भोजन करना। ३.**गामन्तरकप्प**- मध्याह्न में भोजन के बाद भी दूसरे ग्राम में जाना और वहाँ निमन्त्रि होकर दुबारा भोजन करना। ४. **आवासकप्प**- एक ही सीमा वाले स्थान के वासी भिक्षुओं द्वारा अपना अपना उपोसथागार पृथक बना लेना। ५. **अनुमतिकप्प**- निश्चित समय के बाद आने वाले भिक्षुओं से बाद में अनुमति लेने की प्रत्याशा में भगवान द्वारा अननुमत सङ्ख्या के भिक्षुओं द्वारा भी उपोसथ करना। ६. **आचिण्णकप्प**- विनय बुद्धवचन की अपेक्षा गुरुपरम्परा के आचार को अधिक प्रमाण मानना। ७. **अमथितकप्प**- भोजन काल के बाद भी दूध एवं दही की मध्यावस्था वाले दूध को, जो मथा हुआ न हो, पी कसना। ८. **जलोगिकप्प**- मद्य रूप में अपरिणत सुरा का पी सकना। ९.**अदसकनिसीदनकप्प**- ना किनारे का आसन रख सकना। १०. **जातरूप-रजतकप्प**- सोने-चान्दी का ग्रहण कर सकना।[16]

भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण की दूसरी शती में बौद्ध भिक्षु स्थविरवादी तथा महासांघिक दो प्रमुख निकायों में बँट गये थे। इनमें स्थविरवादी भिकक्षु मूल परम्परागत बौद्धधर्मानुयायी थे तथा महासांघिक द्वितीय सङ्गीति के समय बहिष्कृत किये गये भिक्षु थे। कथावत्थु की अठ्ठकथा, दीपवंस, महावंस आदि ग्रन्थों के अनुसार भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण की तीसरी शती के प्रारम्भ में अर्थात अशोक के काल में इन भिक्षुनिकायों की संख्या बढ़कर अट्ठारह (18) हो गयी थी। स्थविरवाद भी स्थीर नहीं रह सका। उसमें भी मतभेद उत्पन्न हुए और वह भी धीरे-धीरे अनेक निकायों में विभक्त हो गया। ऐसे ही महासांघिकों की भी अनेक उपनिकाय बन गये। इन आचार्यवादों ने छोटे-मोटे दार्शनिक आचरण सम्बन्धी मतभेदों को लेकर अपने पक्ष को दृढ़ किया। यद्यपि ये भिक्षु अनेक निकायों में विभक्त हो गये थे, फिर भी इनका लक्ष्य एक था। पूजा, अर्चना, समाधि-भवना, शिक्षापदादि बातों में किञ्चित् विभेदों के कारण ये भिक्षु निकाय भिन्न थे, किन्तु कभी इनमें पारस्परिक संघर्ष नहीं हुआ और न तो इनके कारण वर्गसंघर्ष या धार्मिक वितण्डावाद ही उत्पन्न हुआ। इनकी अपनी-अपनी मान्यताएँ थी और उनमें भी बहुत कम विषमताएँ थी। सभी चार आर्यसत्य और आर्याष्टंगिकमार्ग को ही मानते थे और उनका लक्ष्य श्रावक होते भी ज्ञान प्राप्त करने का था अथवा पारमिताओं को पूर्ण कर सम्यकसम्बुद्धत्व को प्राप्त करने का किन्तु उनके लक्ष्य में कोई भेद नहीं था। दोनों का लक्ष्य निर्वाण को प्राप्त करने का था तथा शास्ता के प्रति उनमें समान श्रद्धा थी। द्वितीय संगीति में शिक्षापदों के उल्लंघन को रोकने के लिए किये गये प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि मूल बुद्ध-वचनों के संशोधन, पारायण आदि कार्य तो सम्पन्न हो गये। कुछ भिक्षुओं में एकता, उत्साह तथा दृढता आदि भी उत्पन्न हो गये। किन्तु समय की माँग द्वारा जनित शिक्षापदों का व्यतिक्रम रोका नहीं जा सका। स्थविरवादी भिक्षुओं द्वारा आयोजित द्वितीय सङ्गीति वज्जिपुत्तक भिक्षुओं द्वारा वैशाली के बालुकाराम में सम्पन्न हुई और इस सङ्गीति के उत्प्रेरक पक्षसंग्राहक आयुष्मान यश काकण्डपुत्र की नगरी कोशाम्बी में इन आयुष्मानों द्वारा निष्कासित भिक्षुओं ने अपनी सङ्गीति की और इस प्रकार एक दूसरे की नगरों में एक दूसरे के वास-स्थान में एक दूसरे द्वारा अपनी सङ्गीतियों का आयोजन किया गया था। यही प्रतिस्पर्धा की भावना, अगे भी बनी रही और दो प्रमुख निकियों से अट्ठारह निकायों का जन्म अशोक के काल तक हो चुका था।[17]

महावंस के अनुसार प्रारम्भ में तथागत के महापरिनिर्वाण के तत्काल बाद महास्थविर महाकाश्यप का प्रधानता में जो प्रथम धर्मसङ्गीति हुई उसे स्थविरीय (थेरीय) सङ्गीति कहते है। फिर भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के सौ वर्ष बाद तक सङ्घ में एक आचार्यवाद ही प्रमुख रहा जिसे स्थविरवाद कहते हैं। तदनन्तर द्वितीय सङ्गीतिकार स्थविरों ने उन सभी दश हजार पापी भिक्षुओं का निग्रह कर दिया था जो दश वस्तुओं के मानने वाले थे।[18] महासंघिक भिक्षुओं से गोकुलिक और एकव्यवहारिक निकायों का जन्म हुआ। गोकुलिकों से प्रज्ञप्तिवादी तथा बाहुलिक और उन्हीं से चैत्यवादी भी उत्पन्न हुए। इस प्रकार महासांघिकों सहित ये छः भिक्षुनिकाय बन गये। फर स्थविरवाद में से महिसासक और वज्जिपुत्तक (वात्सीपुत्रीय) ये दो निकाय उत्पन्न हुए। वज्जिपुत्तक भिक्षुओं से धर्मोत्तरीय, भद्रयानिक, छन्नागारिक और सम्मितीय निकायों का जन्म हुआ। महिसासकनिकाय से सर्वास्तिवाद और धर्मगुप्तिक ये दो निकाय उत्पन्न हुए। स्थविरवाद से काश्यपीय और फिर उससे सांक्रान्तिक और सूत्रवादी उत्पन्न हुए। सर्वास्तिवाद के साथ यह सब बारह उपनिकाय हुए। महासांघिकनिकाय के छः उपनिकाय तथा स्थविरवाद के बारह निकाय हैं। सब मिला कर

अट्ठारह निकाय हुए।[19]

महावंस के अनुसार अट्ठारह निकायों का रेखाचित्र यह है-[20]

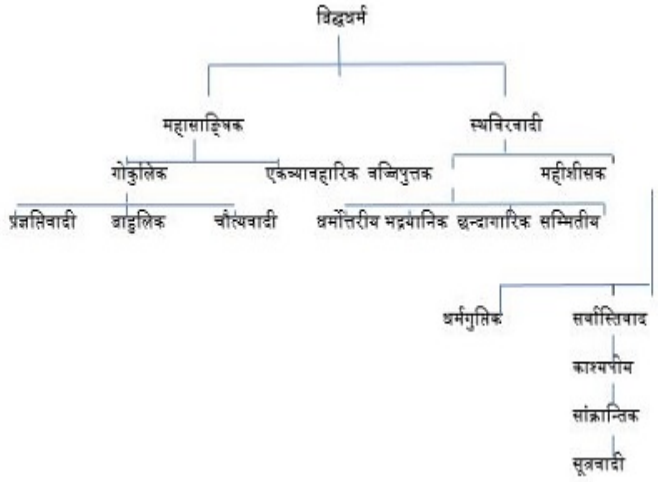

दीपवंस के अनुसार निकाय-भेद का क्रम इस प्रकार है[21]

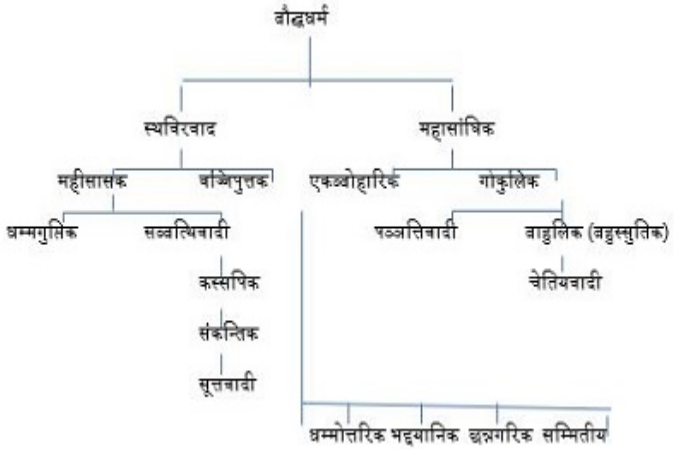

सन्दर्भग्रन्थसूचीः-

1. महावंस,अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996.

2. अभिधम्मत्थसङ्गहो पठमो भागो, सम्प.- प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, प्रका.- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1991.

3. भारत में बौद्धनिकायों का इतिहास, श्रीनारायण श्रीवास्तव, प्रका.- किशोर विद्या निकेतन भदैनी, वाराणसी, 1981.

4. लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां,सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002.

5. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006.

6. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पी. वी. बापट, प्रका.- प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पनर्मुद्रण, 2010.

7. अभिधम्मत्थसङ्गहो पठमो भागो, सम्प.- प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, प्रका.- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1991

8. प्रारम्भिक बौद्धधर्म संघ एवं समाज, डॉ. शिवाकान्त बाजपेयी, प्रका.- ज्ञानभारती पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण,2002;

9. भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास, अनुवादक-रिगजिन लुण्डुप लामा, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना, 1971.

10. ललितविस्तर, , अनु.- शान्तिभिक्षु शास्त्रि, प्रका.-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण,1992;

11. भगवान बुद्ध और उनका धर्म, अनु.- डॉ॰ भदन्त आनन्द कौसवल्यायन, प्रका.-बुद्धभूमि प्रकाशन, नागपुर, 1997;

12. बुद्धचर्य्या, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, प्रका.-सम्यक प्रकाशन, चतुर्थ संसकरण,2008.

13. Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Digha Nikaya*. Wisdom Publications,

14. Gombrich, R. F. (2006). *Theravada Buddhism: A Social History from Ancient Benares to Modern Colombo*. Routledge, pp.

15. लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां, पृ. 88, सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002.

16. सौत्रान्तिक दर्शन, पृ. 38, प्रो. रामशङ्कार त्रिपाठी, प्रका.- केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ वाराणसी, प्रथम संस्करण 2008, द्र॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ. 140-141, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006.

17. hi.m.wikipedia.org date- 12/12/2021, time-11:21.

18. m-hindi-webdunia-com date- 12/12/2021, time-11:27.

19. https://mimirbook.com date- 14/12/2021, time-08:27.

20. https://jivani.orgdate- 14/12/2021, time-09:07.

21. hi.m.wikipedia.org date- 14/12/2021, time-09:09.

सन्दर्भ

1. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृष्ट 12-13, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रकाशन-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006; द्रष्टव्य- बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पी.वी. बापट, भूमिका पृ. 1,प्रका.- विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नईदिल्ली, पुनर्मुद्रण, 2010;द्र॰- प्रारम्भिक बौद्धधर्म संघ एवं समाज, पृ. 15, डॉ. शिवाकान्त बाजपेयी, प्रका.-ज्ञानभारती पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण,2002;द्र॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ.16, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, तृतीय संस्कार,1990.

2. लोओ-सी प्राचीन चीन के एक प्रसिद्ध दार्शनिक थे, जो ताओ ते चिंग नाम से मशहूर उदेशक लेखक के रूप में जाने जाते हैं। उनकी विचारधाराओं को ताओ धर्म कहते है।–hi.m.wikipedia.org date- 12/12/2021, time-11:21.

3. कन्फ्यूशियस बुद्ध के समकाललीन चीनी दार्शनिक थे।– m-hindi-webdunia-com date- 12/12/2021, time-11:27.

4. परमेनीडीसछठी शताब्दी ईसा पूर्व में ग्रीक दार्शनिक था वह एलीटिक (Eleatic) दर्शन के संस्थापक थे।– https://mimirbook.com date- 14/12/2021, time-08:27.

5. जराथुस्त्र छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पारसी धर्म के संस्थापक एक लोकमंगल साधक थे। उन्हें पारसी पैगम्बर कहा जाता है। https://jivani.orgdate- 14/12/2021, time-09:07.

[6].आर्यदेश को भारतवर्ष कहते है।- भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास, पृ.1, अनुवादक-रिगजिन लुण्डुप लामा, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना, 1971.

[7].महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे, वह भगवान बुद्ध के समकाललीन थे।– hi.m.wikipedia.org date- 14/12/2021, time-09:09.

[8].बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पी.वी. बापट, भूमिका पृ. 1, प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली- 110003, पुनर्मुद्रण,2010.

[9].रमणीयान्यरण्यानि वनगुल्माश्च वीरुधाः।प्राचीनमुरुविल्वायां यत्र नैरञ्जना नदी॥- ललितविस्तर, पृ. 513, अनु.- शान्तिभिक्षु शास्त्रि, प्रका.-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, द्वितीय संस्करण,1992;द्र॰- भगवान बुद्ध और उनका धर्म, पृ. 61-62, अनु.- डॉ॰ भदन्त आनन्द कौसवल्यायन, प्रका.- बुद्धभूमि प्रकाशन, नागपुर, 1997; द्र॰-बुद्धचर्य्या, पृ. 48-49, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, प्रका.-सम्यक प्रकाशन, चतुर्थ संसकरण,2008.

[10].पञ्चनेत्तो जिनो पञ्चचत्तालीस समाससो।ठत्वा सब्बानि किच्चानि कत्वा लोकस्स सब्बथा॥

कुसिनारायां यमकसालानमन्तरे वरे।वेसाखपुण्णिमायां सो दीपो लोकस्स निब्बतो॥- महावंस, पृ. 28, अनु.-स्वामी द्वारिकादास शास्त्री,प्रका.-बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मागांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण,1996; तुल॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ. 45-46, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार,2006.

[11].बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पृष्ट. भूमिका-i, सम्प.-पी. वी. बापट, प्रका.- प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पुनर्मुद्रण, 2010.

[12].Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Digha Nikaya*. Wisdom Publications, pp. 231-277. द्र.- Gombrich, R. F. (2006). *Theravada Buddhism: A Social History from Ancient Benares to Modern Colombo*. Routledge, pp. 77-80.

[13].भारत में बौद्धनिकायों का इतिहास, पृ. 87, श्रीनारायण श्रीवास्तव, प्रका.- किशोर विद्या निकेतन भदैनी, वाराणसी, 1981; द्र॰- लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां, पृ. 88, सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002.

[14].भारत में बौद्धनिकायों का इतिहास, पृ. 87, श्रीनारायण श्रीवास्तव, प्रका.- किशोर विद्या निकेतन भदैनी, वाराणसी, 1981.

[15].महावंस, पृ. भूमिका 32, अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996; द्र॰- लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां, पृ. 17-18, सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002.

[16].तथा वेसालिया भिक्खू अनेके वज्जिपुत्तका। सिङ्कलोणं द्वङ्गुलं च तथा गामन्तरं पि च॥

आवासानुमताचिण्णममथितं जलोगि च। निसीदनं अदसकं जातरूपादिकं इति॥

महावंस, पृ. 80, अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996; द्र॰ बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पृ. 11-23, पी. वी. बापट, प्रका.- प्रकाशन विभाग सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पनर्मुद्रण, 2010; द्र॰- लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां, पृ. 88-89, सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002; द्र॰- महान बौद्ध संगातियां, पृ. 45-46, सम्प.- रोशन बौद्ध, प्रका.- सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2014; द्र॰- लदाख-प्रभा बौद्ध संगीतियां, पृ. १८, सम्प.- टशी पलजोर, प्रका.- केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह-लदाख, प्रथम संस्करण, 2002; द्र॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ. 136-137, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006.

[17].भारत में बौद्धनिकायों का इतिहास, पृ. 91-92, श्रीनारायण श्रीवास्तव, प्रका.- किशोर विद्या निकेतन भदैनी, वाराणसी, 1981; तुल॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ. 139-140, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006.

[18].या महाकस्सपादीहि महाथेरेहि आदितो। कता सद्धम्मसङ्गीति थेरिया ति पवुच्चति॥

एको च थेरवादो सो आदि वस्ससते अहु। अञ्ञाचरियवादा तु ततो ओरं अजायिसुं॥

तेहि सङ्गीतिकारेहि थेरेहि दुतियेहि ते। निग्गहीता पापभिक्खूसब्बे दससहस्सका॥- महावंस, पृ. 54, अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996.

[19].महावंस, पृ. 55, अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996; द्र॰- अभिधम्मत्थसङ्गहो पठमो भागो, सम्प.- प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, पृ. भूमि.- 2, प्रका.- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1991; द्र॰- भारत में बौद्धनिकायों का इतिहास, पृ. 92-93, श्रीनारायण श्रीवास्तव, प्रका.- किशोर विद्या निकेतन भदैनी, वाराणसी, 1981.

[20].महावंस, पृ. भूमि.- 41, अनु.- स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, प्रका.- बौद्ध आकर ग्रंथमाला महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1996.

[21].सौत्रान्तिक दर्शन, पृ. 38, प्रो. रामशङ्कार त्रिपाठी, प्रका.- केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ वाराणसी, प्रथम संस्करण 2008, द्र॰- बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ. 140-141, डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे, प्रका.- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्कार, 2006.